मध्य प्रदेश के आर्थिक विकास में पर्यटन की समस्याएँ एवं नियोजन का अध्ययन

देवराज वर्मा[1], डॉ गजराजसिंह अहिरवार[2]

[1]शोधार्थी, श्री सत्यसाई यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी एंड मेडिकल साइंस, सीहोर (म.प्र.) भारत

[2]विभागाध्यक्ष वाणिज्य विभाग, श्री सत्यसाई यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी एंड मेडिकल साइंस, सीहोर (म.प्र.) भारत

सारांश

भारतीय संस्कृति विविधताओं से एवं श्रमण संस्कृति तत्वों पर आधारित है। भारतीय संस्कृति का विकास विभिन्न समूह को, पीढ़ियों व समस्याओं के विकास के बीच लंबे आदान–प्रदान के साथ हुआ है। इसी विकास के मूल में पर्यटन का महत्वपूर्ण स्थान है। विभिन्न स्थानों से आए हुए व्यक्तियों ने एक दूसरे स्थान पर जाकर इस पर्यटन को महत्वपूर्ण बनाया है। पर्यावरण और पर्यटन का घनिष्ठ संबंध है, हमारे चारों ओर विश्व में कई इतने रमणीक स्थान हैं जिन्हें देखने की मनुष्य की आकांक्षा हमेशा से ही बनी रहती है। इन स्थानों पर जाने की मानव की ललक मानव को अपने जीवन में से कुछ महत्वपूर्ण कार्यों के बीच से समय निकालकर कहीं जाने को प्रेरित करती है। पर्यटक एक ऐसी यात्रा है जो मनोरंजन का उद्देश्य होती है। विश्व पर्यटन संगठन के अनुसार पर्यटक वे लोग हैं, जो यात्रा करके अपने सामान्य वातावरण से बाहर के स्थानों में रहने जाते हैं और ज्यादा से ज्यादा मनोरंजन व्यापार आदि इनका महत्व उद्देश्य होता है। पर्यटन मंत्रालय भारत सरकार ने भारत में प्रभावी रूप से पर्यटन के संवर्धन पहले संचालित की है, उद्योग के विभिन्न घटकों की भागीदारी के लिए विदेशों में अनेक पर्यटक स्थल भी बनाए गए हैं। किसी भी राष्ट्र के विकास के लिए पर्यटन एक महत्वपूर्ण आर्थिक क्रिया है, इसके साथ–साथ विभिन्न राष्ट्रों में सांस्कृतिक परिवर्तन लाना महत्वपूर्ण माध्यम है। सामाजिक गतिविधियां सामाजिक शिक्षा पारस्परिक मेल मिला व्यापारिक संबंध बनाने व राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को शिक्षित करने का यह प्रमुख माध्यम है।

मुख्य बिंदु : आर्थिक विकास पर्यटन की समस्याएँ नियोजन

I प्रस्तावना

मध्यप्रदेश के पर्यटन स्थलों का विकास करने की दृष्टि से वर्ष 1978 में म.प्र. राज्य पर्यटन विकास निगम का गठन किया गया। निगम कार्य पर्यटन स्थलों पर आवासीय, गैर आवासीय इकाइयों का संचालन, पर्यटकों को पर्यटन स्थलों की जानकारी सुलभ कराना, पर्यटन स्थलों पर साहित्य का प्रकाशन तथा पर्यटकों को परिवहन सुविधा उपलब्ध कराना है। निगम के अन्य कार्यों में शामिल हैं– आवासीय इकाइयों में आरक्षण, राज्य के बारह निगम के सेटेलाइट कार्यालयों से पर्यटकों के लिए विभिन्न रूचि, अवधि एवं दरों के पैकेज टूरों का संचालन, पर्यटन स्थलों का अखिल भारतीय स्तर पर प्रचार–प्रसार, पर्यटन क्षेत्र से जुड़े ट्रेवल एजेंट्स, लेखक, फोटोग्राफर्स, विशिष्ट व्यक्तियों के लिए टूर का आयोजन, प्रदेश के पर्यटन स्थलों की व्यापक मार्केटिंग तथा प्रचार–प्रसार की दृष्टि से अंतरराष्ट्रीय पर्यटन सम्मेलनों तथा ट्रेवल मार्ट आदि में भागीदारी, पर्यटन विभाग की परामर्शदात्री समिति, संभागीय समिति तथा शासन की पर्यटन संबंधी समितियों द्वारा लिए गए निर्णयों पर कार्रवाई। निगम द्वारा प्रदेश के पर्यटन स्थलों पर आवास, खानपान, परिवहन सुविधा आदि उपलब्ध कराई जाती है।

निगम द्वारा वर्ष 1996 में पर्यटकों को अधिक से अधिक सुविधाएँ मुहैया कराने की दिशा में महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए। निगम द्वारा अमरकंटक में केंद्रीय लोक निर्माण विभाग द्वारा 30 बिस्तरों की क्षमता वाली इकाई हॉलि डे होम्स लीज पर प्राप्त की गई है। नई पर्यटन नीति के तहत निजी निवेशकों को आकर्षित करने की दृष्टि से राजस्व विभाग द्वारा खजुराहो, ओरछा, बाँधवगढ़, जबलपुर तथा मंदसौर जिले में गाँधी सागर तथा बस्तर जिले में चित्रकूट में आवंटित शासकीय भूमि का आधित्य ग्रहण कर लिया गया है। पर्यटकों को पर्यटन स्थलों तक पहुँचाने के लिए भोपाल–इंदौर–भोपाल, भोपाल–पंचमढ़ी–भोपाल, सतना–खजुराहो–सतना, पिपरिया–पंचमढी–पिपरिया, जबलपुर–कान्हा–जबलपुर, जबलपुर–भेड़ाघाट–जबलपुर, भोपाल–साँची–उदयगिरी–भोपाल, इंदौर–महेश्वर–मंडलेश्वर–इंदौर, इंदौर–उज्जैन बस सेवा निगम द्वारा शुरू की गई है।

निगम द्वारा भोपाल में संचालित जलक्रीड़ा संबंधी संबंधी सुविधाओं में व्यापक विस्तार किया गया है। भोपाल के बोट क्लब में नई स्वान बोट, शिकारा मोटर बोट, पैडल बोट बढ़ाई गई हैं। भोपाल–दर्शन, ग्वालियर–दर्शन, पचमढी–दर्शन के अलावा भोपाल से झाँसी–उदयगिरि एवं इंदौर के समीप मुख्य पर्यटन स्थलों के लिए परिचालित भ्रमण शुरू किया गया है।

नई पर्यटन नीति के तहत हेरिटेज होटल की योजना प्रदेश में लागू की गई है। इस योजना के अंतर्गत पुराने महल, हवेलियाँ तथा किलों को होटलों में परिवर्तित किया जाना है। इनमें छतरपुर स्थित राजगढ़ पैलेस को होटल का स्वरूप दिए जाने का निर्णय लिया जा चुका है। इसके अलावा पचमढ़ी सिथत शेखर, सुमन एवं डी.आई.बी.बंगले को हेरिटेज होटल में परिवर्तित किया जाएगा।

II शोध क्षेत्र की साहित्य समीक्षा

टूरिज्म इकोनॉमिक्स फिजिकल एंड सोशल इंपैक्ट में राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में पर्यटक के योगदान (2002) पर विशेष बल दिया इसके अलावा अर्थव्यवस्था के अन्य क्षेत्रों में पर्यटन क्रियाओं से होने वाले विकास का भी अध्ययन किया।

जी एवं (2006) में उल्लेख किया कि पर्यटन के गुण स्वभाव के माध्यम से होने वाले रोजगार लाभ असंख्य अन्य उद्योग सदन प्रथम व्यक्ति क्षेत्रों में आर्थिक लाभों का स्थानांतरण सहायक है।

रतन दीप सिंग (2010) में इन्फ्राट्रक्चर आफ इंडिया में मुख्य रूप से एक उदार उद्योग कहा है उन्होंने जनता को सार्वजनिक उपयोग से उपलब्ध कराने के माध्यम से इस उद्योग को आर्थिक विकास के लिए प्रेरित किया है।

आर.बी.एल गर्ग (2010) ने अपने अध्ययन promoting tourism approach लेख में पर्यटन के दृष्टिकोण को बढ़ावा देने में कई साधनों का अध्ययन किया जिससे पर्यटन की वृद्धि विकास पर्यटन देश की आर्थिक समृद्धि और सामाजिक विकास को बढ़ा है। पर्यटन उद्योग किसी भी विकास अर्थवस्था में विदेशी मुद्रा आया वृद्धि करने रोजगार के अवसर को बढ़ाने और आर्थिक विकास के लक्ष्य को प्राप्त करने मध्यम है।

21वीं शताब्दी में आध्यात्मिक पर्यटनः मूल्यवान घटक और नवीन दृष्टिकोणः टवस. 9 (2017) आध्यात्मिक पर्यटन के स्थायित्व हेतु मूल्यवान पारंपरिक घटक जैसे आध्यात्मिक वातावरण आध्यात्मिक जीवन पद्धति, आध्यात्मिक क्रियाकलाप को शोध का मूल माना गया है। यह कार्य पर्यटन अनुसंधान में भविष्य के शोध कार्य की संभावनाओं प्रदर्शित करता है एवं आध्यात्मिक पर्यटन के स्थायित्व एवं नवीन दृष्टिकोण पर जोर देता है।

III शोध अध्ययन का उद्देश्य

- मध्य प्रदेश के पर्यटन उद्योग का आर्थिक विकास भूमिका।
- मध्यप्रदेश पर्यटन विकास निगम की आर्थिक योजनाओं की समस्याओं का अध्ययन करना।

IV शोध की प्रविधि

प्रस्तुत शोध मध्यप्रदेश के आर्थिक विकास में पर्यटन निगम का योगदान और प्रभाव के माध्यम से संबंधित समस्याओं पर प्रकाश डालने में सहायक होगा। यह शोध मध्य प्रदेश के पर्यटन स्थल के द्वारा घरेलू पर्यटक की संख्या को बढ़ाने में वृद्धि संभव होगी। उद्योग के माध्यम से इसके अध्ययन के द्वारा काफी महत्वपूर्ण है क्योंकि विकास का अर्थव्यवस्था पर प्रभाव ज्ञात करने के लिए इस उद्योग से जुड़े व्यवसायियों और पर्यटन विशेषज्ञों तथा पर्यटन स्थल पर आने वाले पर्यटकों के विचारों को जानना महत्वपूर्ण होगा।

V पर्यटन की समस्याएँ

किसी भी देश अथवा प्रदेश के विकास में उसकी यातायात व्यवस्था का बड़ा योगदान होता है । मध्यप्रदेश में प्रमुख रूप से यातायात के तीन प्रमुख साधन सड़क , रेल तथा वायु परिवहन है इन परिवहन साधनों के महत्व को देखते हुए ही प्रदेश सरकार ने परिवहन विकास को प्राथमिकता प्रदान की है।

पर्यटन स्थल पर पर्यटकों के आने की संख्या में वृद्धि के साथ साथ व्यापार को भी बढ़ावा मिल रहा है इससे स्पष्ट होता है कि परिवहन व्यवस्था का राज्य की अर्थव्यवस्था में अहम योगदान होता है ,किंतु प्रदेश में यातायात के विकास के समक्ष अनेक समस्याएं भी विद्यमान है जो कि निम्नलिखित है ।

(क) वित्त की समस्या– यातायात विकास में सबसे बड़ी समस्या वित्त की है पर्याप्त वित्त के अभाव की वजह से यातायात परियोजनाएं सुचारु रुप से संचालित नहीं हो पाती है तथा कई परियोजनाएं अधूरी रह जाती है उच्च स्तर से वित्त की समय पर आपूर्ति ना हो पाना भी एक प्रमुख समस्या है ।

(ख) उच्च स्तरीय तकनीकी का अभाव– मध्यप्रदेश के यातायात के विकास मार्ग में उच्च स्तरीय तकनीकी का अभाव भी है जिस वजह से उच्च स्तर की सड़कें या परिवहन के लिए अन्य आधारभूत संरचना का विकास सुचारू रूप से नहीं हो पाता है और कई परियोजनाएं काफी समय तक लंबित रह जाती है या मानकों में खरी नहीं उतरती है ।

(ग) सुरक्षा एवं आतंकवाद की समस्या– स्थानीय समस्याओं से उपजा आंतकवाद आज तक अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दा बन गया है, जिसके चलते सुरक्षित पर्यटन एक बहुत बड़ी उपलब्धि ही कहा जायेगा क्योंकि आये दिन आमानवीय हिंसा एवं दुर्घटनाओं का शिकार किसी मासूम पर्यटक को होना पड़ सकता है। समूचे विश्व में फैल रहा आंतकवाद आज पर्यटन व्यवसाय के लिए मुख्य चुनौती है। मध्य प्रदेश आज पर्यटन व्यवसाय के लिए एक मुख्य चुनौती है। मध्य प्रदेश में नक्सलवाद के कारण पर्यटन विस्तार में बाधा उत्पन्न हो रही है। प्रदेश के कुछ प्रमुख जिले जैसे छिंदवाड़ा, जगदलपुर, रायगढ़, अबिकापुर, बालाघाट, मंडला, सिवनी इत्यादि के नक्सलवादी संगठनों के सक्रिय होने के कारण सार्वजनिक जन सुरक्षा अधिक चुनौतीपूर्ण है। ऐसे में इस समस्या से निपटने के लिए आवश्यक है कि सेवा व पुलिस का विशेष दल बनाया जाय, उनको विशेष प्रशिक्षण दिया जाय। साथ ही एक हेल्पलाइन जो सरलता सुगमता के साथ पर्यटकों मदद करने के लिए सदैव तत्पर रहे।

(घ) आवासीय समस्याएं– मध्य प्रदेश में पर्यटन निगम द्वारा उपलब्ध करायी जाने वाली आवासीय सुविधा का अपर्याप्त होना तथा मंहगा होना राज्य के पर्यटन विकास के लिए बाधक है। इसी समस्या की वजह से पर्यटन विकास निगम को काफी हानि उठानी पड़ रही है, क्योंकि निगम की ही दर पर निजी होटल प्रबन्धक पर्यटकों को बेहतर आवासीय सुविधा देकर पर्यटकों को आकर्षित कर लेते हैं, और निगम आय के एक बड़े अंश से वंचित रह जाता है। यदि सरकार इस ओर प्रभाव–नाली कदम उठाती है तो, न केवल पर्यटकों सफकर को सुविधापूर्ण बनाया जा सकता है बल्कि पर्यटन से होने वाली आय को भी पढ़ाने की सम्भावना को मजबूत किया जा सकता है। कुछ पर्यटकों ने उक्त व्यवस्था को ही दोषपूर्ण बताया है. इनकी संख्या कम है, किन्तु इस दिशा में ध्यान देना अनिवार्य है।

(च) स्वास्थ्य सेवाओं की समस्या– मध्य प्रदेश में पर्यटकों के लिए स्थास्थ्य सेवाओं के लिए अपर्याप्त साधन है, जो अपरिपूर्ण रूप से पड़ा है। उसमें पता चला की पर्यटक विमार होता है तो उसको समय पर और उचित स्थान पर ले जाने की सुविधा नहीं है।

पर्यटकों के स्वास्थ्य के लिए चिकित्सा व्यवस्था डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम ने चिकित्सा पर्यटन को बढ़ावा दिया है, जिससे स्वास्थ्य के लिये आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति, योग और विज्ञान का ताल–मेल लोगों के जीवन में आनन्द भर सकता है और पर्यटन के साथ–साथ स्वास्थ्य का भी इलाज हो सके।

VI पर्यटन हेतु नियोजन एवं सुझाव

पर्यटन विभाग का मुख्य दायित्व प्रदेश में पर्यटन स्थलों का चिन्हित किया जाना, पर्यटन स्थलों पर अधोसंरचना का विकास, आवास, परिवहन की सुविधा उपलब्ध कराया जाना, प्रदेश के प्रर्यटन स्थलों की जानकारी उपलब्ध कराये जाने की व्यवस्था की जानी चाहिए। पर्यटकों को सभी पर्यटन स्थलों की विशेष जानकारी की व्यवस्था की जानी चाहिए, जिससे उनके प्रति किसी भी प्रकार की सुविधा में व्यवधान नहीं होना चाहिए। पर्यटन केन्द्रों के विकास के लिए पर्यटन के क्षेत्र में प्रोत्साहन के लिए विभिन्न पर्यटन केन्द्रों हेतु पंचवर्षीय, वार्षिक योजना बनाना, पर्यटन पर बुनियादी ध्यान देना, दिग्दर्शकों का प्रशिक्षण कराना, युवा एवं साहसिक पर्यटन को प्रोत्साहन देना आदि हैं। जिन्हें निम्नुसार दर्शाया गया है, जिनका प्रमुख कार्य होना चाहिए।

- पंचवर्षीय योजना, प्रमुख कार्य होना चाहिए।
- केन्द्र एवं राज्य योजनाओं की प्रगति का निरीक्षण एवं समय–समय पर केन्द्रीय पर्यटन मंत्रालय को जानकारी देना।
- क्षेत्रिय एवं स्थानीय महत्व को पर्यटन आकर्षण की जानकारी एकत्रित करना ।
- पर्यटन विभाग की परामर्शदात्री समिति एवं संभागीय समितियों के द्वारा लिये गये निर्णयों पर कार्यवाही।
- स्थानीय निकाय, जल संसाधन एवं अन्य विभागों के समन्वय से पर्यटन सुविधाओं का विस्तार।
- वार्षिक बजट नियन्त्रण अधिकारी, पर्यटन निगम, जिलाध्यक्षों एवं स्थानीय निकायों की बजट आवंटन।
- केन्द्रिय योजनाओं के अंतर्गत केन्द्र एवं राज्य शासन से प्राप्त राशि का आवंटन।
- पर्यटन केन्द्रों पर आवश्यक सुविधायें प्रदान करने के लिए स्थानीय निकायों को अनुदान देना।
- प्रदेश में एक्सकर्शन एजेन्सी का पंजीकरण एवं मान्यता देना।
- केन्द्रीय पर्यटन विभाग द्वारा गठित होटल वर्गीकरण समिति में राज्य की ओर से प्रतिनिधित्व करना।
- पर्यटकों की सुविधा के लिए पर्यटन केन्द्रों पर दिग्दर्शकों के प्रशिक्षण का संचालन।
- युवा वर्ग के साहसिक पर्यटन प्रोत्साहन के लिए स्वयत्त संस्थाओं को अनुदान करना।
- ऐतिहासिक, धार्मिक, सांस्कृतिक पर्यटन स्थलों का ध्यान रखा जाय, उनकी क्षति को रोका जाय, जिससे भारतीय संस्कृति अपने यथावत स्वरूप में विद्यमान रहे और निरन्तर प्रगतिशील रहे।

VII पर्यटकों के आकर्षण हेतु प्रचार एवं उपाय

मध्य प्रदेश में पर्यटकों के आकर्षण हेतु कई प्रकार के लुभावने प्रचार–प्रसार किये जाते हैं, जिससे आने वाले प्रदेश में पर्यटकों को सुन्दर और अच्छा लगे, और लोग प्रभावित हो, जिससे पर्यटन के क्षेत्र में उसका विस्तार हो सके, और प्रमुख प्रकार के रोजगार के साधन उपलब्ध हो सके। विभिन्न प्रकार के नृत्य, गान, मनोरंजन के साधन, कलात्मक वस्तुएँ प्राचीन धरोहर, राजसी राज घरानों द्वारा स्थापित महल एवं चार मीनार, समस्त प्रकार की गुफाएँ एवं मकबरे नदीय पर्यटन स्थल, प्राकृतिक परिदृश्य, आकर्षक पर्वत एवं पठार, प्रकृति की गोद में हरियाली की मनोरमा, अनेक सुन्दर पशु एवं पक्षी, विभिन्न प्रकार के वन एवं बिहार, विश्व विरासत जीव एवं जानवर जो पर्यटकों के आकर्षण प्रचार–प्रसार किया जाता है।

VIII उपसंहार

मध्य प्रदेश राज्य देश का एक मात्र राज्य है जो अलग–अलग तरह की पर्यटन की सम्भावनाओं को प्रस्तुत करता है। इसमें पहाड़ी, जंगल, इतिहास, एडवेंचर, इको–पर्यटन चिकित्सा (जिसमें आयुर्वेद और राज्य चिकित्सा के रूप में भी शामिल है), आध्यत्मिक आदि शामिल है। ऐसा कहा जाता है कि राज्य में जो पर्यटन स्थल है वो किसी भी अन्य राज्य के पर्यटन स्थल से ज्यादा विविध हैं। भारत के हर एक क्षेत्र में अपनी एक खास संस्कृति हैं, उत्सव है, वेशभूषा है और ऐतिहासिक धरोहर है। वर्तमान समय 16 पर्यटन केन्द्रों में 215 दर्शनीय स्थल है जो अनेक प्रकार की सम्भानावाओं प्रस्तुत करते हैं।

मध्य प्रदेश सात पड़ोसी देशों की सीमाओं से अबद्ध क्षेत्रफल में सबसे बड़ा राज्य होने के साथ–साथ अपने गौरवमय अतीत, संरक्षित संगठन तथा विपुल नैसार्गिक सौन्दर्य के कारण अन्य राज्यों की तुलना में विशिष्ट स्थान रखता है। यह अपने सौन्दर्य, आकर्षण एवं विविधताओं के कारण पर्यटकों को स्वयं आकर्षित होने पर मजबूर कर देता है फिर चाहे यह पर्यटन इतिहास प्रेमी पुरातात्विक हो या वन्य प्राणी प्रेमी अथवा प्रकृति का चहेता क्यों न हो।

12वीं पंचवर्षीय योजना में मध्य प्रदेश राज्य सरकार द्वारा पर्यटन के विकास के लिए अब पर्याप्त ध्यान दिया जा रहा है, जिसके परिणाम स्वरूप राज्य के विभिन्न पर्यटन केन्द्रों में पर्यटकों की संख्या क्रमशः बढ़ती जा रही है। इसलिए राज्य में पर्यटन के विकास के लिए व्यापक सम्भावनाएं हैं। मध्य प्रदेश राज्य के वर्तमान पर्यटन केन्द्रों में पर्यटकों का आवास, भोजन, परिवहन, सुरक्षा व निर्देशन जैसी समस्या है।

पर्यटन के क्षेत्र में इकोपर्यटन को और बढ़ावा दिया जाय, जिससे पारिस्थितिक सन्तुलन को बनाये रखें। मध्य प्रदेश राज्य जैव विविधता के मामले में बहुत धनी है, उनको अधिक से अधिक संरक्षण की आवश्यकता है। नये पर्यटन केन्द्रों के विकास से राष्ट्र की आर्थिक वृद्धि में सहायता मिलेगी एवं बेरोजगार व्यक्तियों को रोजगार की प्राप्ति होगी तथा इसके लिए पर्यटन के विकास हेतु अत्यधिक प्रचार–प्रसार की आवश्यकता है। विभिन्न नियोजनों में पर्यटन की सहभागिता न होने के कारण जनसाधारण विकास योजनाओं से मीलों दूर है। यदि पर्यटन के विकास में समस्याएँ एवं सम्भावनाओं पर समुचित ध्यान दिया जाय तो पर्यटन का विकास और उचित तरीके से हो सकता है इस क्षेत्र में अन्नत सम्भावनाएं विद्यमान हैं।

संदर्भ सूची

[1] गुप्ता, डॉ पापिया दास, पर्यटन एक अध्ययन'' मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल 2004.

[2] व्यास, डॉ राजेश । कुमार, भारत में पर्यटन विद्या विहार, नई दिल्ली, 2008.

[3] व्यास, डॉ राजेश । कुमार, "पर्यटन उदभव एवं विकास'' राजस्थान ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2013

[4] शर्मा, अतुल, ''भारत में पर्यटन उद्योग की संभावनाएँ, इपिका पब्लिगिंग हाउस, जयपुर, 2012.

[5] Lahri, Sudesh (2004); India Tourism Destination for All Seasons, Adhyayan Publishers and Distributors, New Delhi.

[6] Narayan, Parwssh K. (2004): Economic Impact of Tourism on Fiji 's Economy ;Empirical Evidence from the Computabe Generl Equilibrium Model (2004), Tourism Economics, VOL.10, No. 4 ,p.419-433.

[7] Seth, Prem Nath (1997): Successful Tourism Management' Fundamentals Tourism, Vol-Sterling Publishes, New Delhi.

[8] Usha Arora (Oct. 2000) "Strategic Management in Travel and Tourism